८. उड़ान

– चंद्रसेन विराट

संभाषणीय

विद्यालय के काव्यपाठ कार्यक्रम में सहभागी होकर कविता प्रस्तुत कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● काव्यपाठ का आयोजन करवाएँ । ● विषय निर्धारित करें । ● विद्यार्थियों को निश्चित विषय पर काव्यपाठ प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करें ।

अँधेरे के इलाके में किरण माँगा नहीं करते
जहाँ हो कंटकों का वन, सुमन माँगा नहीं करते ।

जिसे अधिकार आदर का, झुका लेता स्वयं मस्तक
नमन स्वयमेव मिलते हैं, नमन माँगा नहीं करते ।

परों में शक्ति हो तो नाप लो उपलब्ध नभ सारा
उड़ानों के लिए पंछी, गगन माँगा नहीं करते ।

जिसे मन-प्राण से चाहा, निमंत्रण के बिना उसके
सपन तो खुद-ब-खुद आते, नयन माँगा नहीं करते ।

जिन्होंने कर लिया स्वीकार, पश्चात्ताप में जलना
सुलगते आप, बाहर से, अगन माँगा नहीं करते ।

****

जिसकी ऊँची उड़ान होती है,
उसको भारी थकान होती है ।

बोलता कम जो देखता ज्यादा,
आँख उसकी जुबान होती है ।

बस हथेली ही हमारी हमको,
धूप में सायबान होती है ।

एक बहरे को एक गूँगा दे,
जिंदगी वो बयान होती है ।

तीर जाता है दूर तक उसका,
कान तक जो कमान होती है ।

खुशबू देती है, एक शायर की,
जिंदगी धूपदान होती है ।

—०—

परिचय

जन्म : ३ दिसंबर १९३६ इंदौर (म.प्र.)

परिचय : हिंदी गजल के इतिहास में चंद्रसेन विराट जी का नाम शीर्षस्थ गजलकारों में है । आपने नवगीतों और गजलों से मिली-जुली मुक्तिकाओं में आम आदमी के जीवन को गहराई से देखा है ।

प्रमुख कृतियाँ : मेंहदी रची हथेली, स्वर के सोपान, मिट्टी मेरे देश की, धार के विपरीत आदि (गीत संग्रह), आस्था के अमलतास, कचनार की टहनी, न्याय कर मेरे समय आदि (गजल संग्रह) कुछ पलाश कुछ पाटल, कुछ सपने, कुछ सच आदि (मुक्तक संग्रह)

पद्य संबंधी

गजल : गजल एक ही बहर और वजन के अनुसार लिखे गए शेरों का समूह है । इसके पहले शेर को मतला और अंतिम शेर को मकता कहते हैं ।

प्रस्तुत रचनाओं में विराट जी ने स्वाभिमान, विनम्रता, हौसलों, बुलंदी, दूरदृष्टि जैसे अनेक मानवीय गुणों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है ।

शब्द संसार

अगन (पुं.सं.) = अग्नि, आग

सायबान (सं.पुं.फा.) = छाया देने वाला

बयान (पुं.सं.) = वक्तव्य

तीर (पुं.सं.) = बाण

कमान (सं.स्त्री.फा.) = धनुष

श्रवणीय

हिंदी-मराठी भाषा के प्रमुख गजलकारों की गजल रचना सुनिए और सुनाइए ।

कल्पना पल्लवन

'मैं चिड़िया बोल रही हूँ' इस विषय पर स्वयंप्रेरणा से लेखन कीजिए ।

पठनीय

'दहेज' जैसी सामाजिक समस्याओं को समझते हुए इसके संदर्भ में जनजागृति करने हेतु घोषवाक्यों का वाचन कीजिए ।

8PTHFE

आसपास

अंतरजाल की सहायता लेकर कोई कविता पढ़िए और निम्न मुद्दों के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए :-

कवि का नाम | कविता का विषय | केंद्रीय भाव | कविता का संदेश

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए :-

* सही विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(क) परों में शक्ति हो तो ....

१. उपलब्ध नभ को नापना है ।

२. उपलब्ध जल को नापना है ।

३. भू को नापना है ।

(ख) सुलगते आप, बाहर से

१. तपन नहीं माँगा करते ।

२. अगन नहीं माँगा करते ।

३. बुझन नहीं माँगा करते ।

(४) संजाल :-

कवि ने इन मानवीय गुणों की ओर संकेत किया है

(२) निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का सरल भावार्थ लिखिए:-

अँधेरे के इलाके में .... नमन माँगा नहीं करते ।

(३) कविता द्वारा दिया गया संदेश अपने शब्दों में लिखिए ।

(४) कविता में प्रयुक्त विरामचिह्नों के नाम लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

रचना बोध

....

....

....